सार्त्र का अस्तित्ववाद एवं मानव

डॉ0 श्याम कान्त

अस्तित्ववाद समकालीन पाश्चात्य दर्शन की एक महत्वपूर्ण विचारधारा है, जिसे प्रतिष्ठित करने में फ्रांसीसी दार्शनिक ज्याँ पाल सार्त्र का विशेष योगदान है। उन्हें यह भी श्रेय देना होगा कि उन्होंने अस्तित्ववाद के तात्विक एवं मूलगत सिद्धान्त को सुसम्बद्ध रूप से समझाने का प्रयास किया है। निःसंदेह वे अस्पष्ट और अपिरिचत शब्दावली का प्रयोग करते हैं, किन्तु उनके प्रतिपादन का ढंग ऐसा है कि उनका दर्शन सुगम हो जाता है। साथ ही सार्त्र ने अस्तित्ववाद का इतने जीवन्त और प्रभावशाली विधि से प्रतिपादन किया कि वह अत्यधिक लोकप्रिय बन गया तथा शिक्षित वर्ग इसके प्रति विशेष रूप से आकर्षित हुआ। सार्त्र अपने युग की फ्रांसीसी युवा पीढ़ी की अभिरूचि और वाद–विवाद का केन्द्र रहे हैं। यदि उनके कुछ प्रशंसक और भक्त हैं तो कुछ निन्दक एवं आलोचक भी हैं। सार्त्र की विचारधारा को उपेक्षणीय सिद्ध करने के लिए इन आलोचकों ने उन्हें 'कॉफी हाउस का चिन्तक' तथा उनके दर्शन को 'कैफे फिलॉसफी' भी कहा। किन्तु सार्त्र की विचारधारा की इस भाँति उपेक्षा करना सम्भव नहीं था। यदि किसी विचारधारा का चिन्तन पुष्ट हो, उसमें मनुष्य के लिए दृढ़ अवलम्ब हो अथवा वह जीवन को प्रतिबिम्बित करता हो तो वह चिन्तन के इतिहास में अक्षुण्ण रहेगी। यही कारण है कि सार्त्र के चिन्तन को पर्याप्त स्वीकृति प्राप्त हुई है। वस्तुतः सार्त्र फ्रांसीसी परम्परा के एक प्रखर बुद्धिजीवी हैं। वे दार्शनिक हैं, मनोवैज्ञानिक हैं, नाटककार तथा उपन्यासकार हैं। इन सभी विषयों पर उनका समान अधिकार है। उन्होंने जो कुछ लिखा है उसमें अर्थ और उद्देश्य की एकता है तथा उनका ''दर्शन'' उस एकता का सूत्र है।